इकाई-III Date:- 14.05.2020

Topic:- भाषा सीखना : जीन पियाजे (Next class)

पियाजे के संदर्भ में यह स्वीकार किया जाता है कि दो साल की उम्र से बच्चों की बौद्धिक संरचना में सांकेतिक कार्यों के कारण महत्वपूर्ण परिवर्तन होते जाते हैं। बच्चा मानसिक छवियों तथा सांकेतिक भंगिमा बनाने के साथ-साथ भाषा का उपयोग करना सीखने लगता है। 'सांकेतिक कार्य' मानसिक छवियों बनाने, खेलने, ड्राइंग बनाने तथा भाषा का उपयोग करने में प्रकट होते हैं। इस उम्र से पहले भी बच्चा शब्दों का उपयोग करता है। लेकिन शब्दों को संकेत के रूप में उपयोग करने संबंधी 'स्कीमा' का विकास दो साल की उम्र से शुरू होता है। इस उम्र में वह ऐसे वाक्य बनाने लगता है जिनमें एक से ज्यादा शब्दों का उपयोग होता है। वह व्याकरणिक नियमों को भी समझने लगता है। अब बच्चा इंद्रिय क्रियाओं से भी तेज क्रिया कर सकता है। वह तात्कालिक घटनाओं से परे जाकर उन पर बात कर सकता है। व्यवहार करने के लिए उसे वातावरण के तात्कालिक पक्ष तक सीमित नहीं रहना पड़ता। भाषा की वजह से उसके दिक् तथा काल की सीमाओं का विस्तार होता है। अब उसके पास ऐसे 'स्कीमाज' होते हैं उसे जो इस समय तथा इस स्थान पर मौजूद घटनाओं के साथ-साथ अन्य समय में घटी-घटनाओं को ध्यान में रखकर व्यवहार करने में भी सक्षम बनाते हैं। भाषा का उपयोग सामाजिक जीवन को विस्तार देने तथा उसके प्रतीकीकरण हेतु किया जाने लगता है। भाषा के विकास के संदर्भ में पियाजे का विश्वास है कि विकास की औपचारिक अवस्था से पहले तक भाषा का स्वतंत्र उपयोग नहीं होता। इससे पहले तक भाषा तमाम सांकेतिक कार्यों के साथ मिलकर काम करती है। इस अवस्था से पहले क्रियाओं के कारण भाषा का विकास होता है। जब बच्चा वस्तुओं तथा घटनाओं का रूपांतरण करके उन्हें आत्मसात किए जा सकने वाले रूप में ढालता है तो इस प्रक्रिया में उसकी भाषा विकसित होती है। इस ढालने की प्रक्रिया को पियाजे कहते हैं। इस प्रक्रिया में 'स्कीमाज' बनते बिगड़ते हैं। जिनकी वजह से भाषा का विकास होता है। पियाजे के अनुसार बौद्धिक-संरचनाओं के बनने के लिए आत्मसातीकरण तथा समायोजन के सक्रिय होने के कारण भाषा का विकास होता है।

END

Scanned with CamScanner